❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

यत्र सोमः सदमित्तग भद्रम्।
अथर्व. 7/18/2
जहां शान्तिवर्षक परमात्मा है वहां सदा ही कल्याण है।
Wherever is the divine bestower of peace, there is plenty of prosperity & happiness.

वर्ष 43, अंक 9 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 23 दिसम्बर, 2019 से रविवार 29 दिसम्बर, 2019
विक्रमी सम्वत् 2076 सृष्टि सम्वत् 1960853120
दयानन्दाब्द : 196 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

93वें बलिदान दिवस पर विशाल शोभायात्रा एवं श्रद्धांजलि सभा संपन्न

कड़ाके की ठंड में पहुंचकर हजारों आर्यजनों ने किया स्वामी श्रद्धानन्दजी को नमन

नागरिक संसशोधन अधिनियम-2019 का पूर्ण समर्थन करता है-आर्य समाज : आर्यों ने चलाया हस्ताक्षर अभियान

आर्य समाज के हर कार्यक्रम में सहभागी होगा डी.ए.वी. संस्थान - एस.के. शर्मा

मानवता के मसीहा थे स्वामी श्रद्धानंद - धर्मपाल आर्य

स्वामी श्रद्धानंद के पदचिंहों पर चल रही है भारत सरकार - मोनिका अरोड़ा

राष्ट्र एवं मानव सेवा को समर्पित आर्य समाज के प्रेरणा स्तंभ अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानंद जी के 93वें बलिदान दिवस पर आर्य केंद्रीय सभा दिल्ली राज्य के तत्वावधान में विशाला शोभायात्रा एवं वृहद सार्वजनिक सभा का आयोजन 25 दिसंबर 2019 को दिल्ली के ऐतिहासिक रामलीला मैदान में संपन्न हुआ। प्रातः काल 8 बजे से 9:30 बजे तक आचार्य सहदेव शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में एवं आर्यसमाज नया बांस के सहयोग से स्वामी श्रद्धानंद बलिदान

श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित गुरुकुल कांगड़ी की पुण्यभूमि के कण-कण में है श्रद्धा की खुशबू - डॉ. सत्यपाल सिंह

भवन में यज्ञ के साथ कार्यक्रम का आरंभ हुआ। जिसमें आर्य केंद्रीय सभा दिल्ली व आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के अधिकारियों ने अत्यंत श्रद्धापूर्वक भाग लिया।

शोभायात्रा का नेतृत्व : हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी शोभायात्रा का समय 10 बजे सुनिश्चित था। दिल्ली में कड़ाके की ठंड और शरद हवाओं के बीच बच्चे, वृद्ध, युवा और नर-नारी सभी अपने गले में पीतवस्त्र, सिर पर पगड़ी पहने हुए समय से पूर्व ही विभिन्न तरह के वाहनों में बैठकर कतारबद्ध हो गए थे। वेद मंत्रों के उच्चारण और वैदिक जयघोष के बीच श्रीमती प्रभा आर्या जी ओम् ध्वज लेकर आगे चली, तो श्री आशीष अरोड़ा जिन्होंने स्वामी श्रद्धानंद जी का प्रारूप धारण किया हुआ था। उनके पीछे-पीछे चले। उसके बाद रथ पर विराजमान स्वामी प्रणावानंद जी, वरिष्ठ वैदिक संन्यासी एवं कई गुरुकुलों के प्रणेता, श्री सुरेंद्र कुमार रैली, वरिष्ठ उपप्रधान, श्री धर्मपाल आर्य प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री विक्रम नरुला उपप्रधान, श्रीमती उषा किरण आर्या जी, श्री राजेंद्र दुर्गा जी, श्री अजय सहगल जी, सतीश चड्डा, महामंत्री, श्री अरुण वर्मा जी कोषाध्यक्ष, श्री योगेश आर्य जी, श्री जोगेंद्र खट्टर जी, श्री एस.पी.सिंह जी, श्री सुरेंद्र चौधरी जी इत्यादि महानुभावों

- शेष पृष्ठ 4-5-एवं 7 पर

शोभायात्रा का नेतृत्व करते सर्वश्री स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, धर्मपाल आर्य, सुरेन्द्र कुमार रैली, मदन मोहन सलूजा, यशपाल आर्य, विक्रम नरुला, अरुण आर्य एवं अन्य

ऋषि दयानन्द की शिक्षा को जन-जन तक पहुंचाएं : सत्यार्थ प्रकाश पढ़ाकर जग को-विश्वधरा महकाएं

आमजनों तक सत्यार्थ प्रकाश पहुंचाने का अत्याधुनिक मंच

विश्व पुस्तक मेला-2020 प्रगति मैदान, नई दिल्ली

4 से 12 जनवरी, 2020
प्रातः 11से रात्रि 8 बजे

हिन्दी साहित्य : हॉल नं. 12A
स्टाल सं. 151-160

अंग्रेजी साहित्य : हॉल नं. 7H
स्टाल सं. 62-63

मेला समापन
12 जनवरी, 2020

50 हजार नए व्यक्तियों तक 10/- रु. में सत्यार्थ प्रकाश पहुंचाने में अपना योगदान दें

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का अमूल्य ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश जोकि 50/- रुपये का है, सभा को 30/- रुपये में प्राप्त होता है। आप द्वारा प्रदान की गई 20/- सब्सिडी (छूट) से इस अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश को विश्व पुस्तक मेले के अवसर पर मात्र 10 रुपये में उपलब्ध कराया जाता है। अतः आप सभी दानी महानुभावों एवं आर्य संस्थाओं से से निवेदन है कि अधिकाधिक प्रतियां 10/- में उपलब्ध कराने हेतु अधिकाधिक छूट सहयोग प्रदान करें।

सत्यार्थ प्रकाश छूट हेतु दी गई दानराशि 80जी के अन्तर्गत छूट प्राप्त है। दानदाताओं महानुभावों के नाम आर्यसन्देश साप्ताहिक में प्रकाशित किए जाएंगे

आप अपनी सहयोग राशि सीधे तौर पर सभा के निम्नांकित बैंक खाते में भी जमा करा सकते हैं। कृपया राशि जमा कराते ही कृपया श्री मनोज नेगी जी (9540040388) को सूचित अवश्य करें ताकि आपको राशि की रसीद भेजी जा सके और आर्यसन्देश में नाम भी प्रकाशित किया जा सके।
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा A/c No. 1098101000777 केनरा बैंक संसद मार्ग IFSC Code : CNRB0001098 MICR No. :110015025

विश्व पुस्तक मेले में समय दान करने वाले सहयोगी कार्यकर्त्ता अपने नाम श्री सुखबीर सिंह आर्य (9350502175) को नोट कराएं।

वेद-स्वाध्याय

आत्मविशुद्धि द्वारा सर्वविधैश्वर्य प्राप्ति

इन्द्र शुद्धो हि नो रयिं शुद्धो रत्नानि दाशुषे।
शुद्धो वृत्राणि जिघन्से शुद्धो वाजं सिषाससि।। -ऋ० 8/95/9
ऋषिः **तिरश्ची**।। देवता - **इन्द्रः**।। छन्दः **अनुष्टुप्**।।

शब्दार्थ - **इन्द्र** = हे आत्मन्! **शुद्धः हि** = शुद्ध हुए-हुए ही तुम **नः** = हमें **रयिम्** = ऐश्वर्य देते हो, **शुद्ध** = हुए-हुए तुम **दाशुषे** = दानशील के लिए **रत्नानि** = रत्नों को, रमणीय धनों को देते हो। **शुद्धः** = शुद्ध हुए-हुए तुम **वृत्राणि** = वृत्रों को, पापों को, बाधाओं को **जिघ्नसे** = हनन करते हो और **शुद्धः** = शुद्ध हुए-हुए तुम **वाजम्** = ज्ञान-बल को **सिषाससि** = देना चाहते हो, देते हो।

विनय - हे आत्मन्! तुम परमैश्वर्य वाले हो। हे इन्द्र! तुम हमें सब प्रकार का ऐश्वर्य दे सकते हो। हम यूँ ही बाहर भटकते हैं, बाहर की वस्तुओं का आसरा देखते हैं, जबकि सब अनिष्टों को हटा सकने वाले और सब अभीष्टों के दे सकने वाले, हे मेरे आत्मन्! तुम हमारे अन्दर विद्यमान हो, फिर भी, हममें तुम्हारी जो यह शक्ति अभी प्रकट नहीं होती है इसका कारण यह है कि हमने अपने अन्दर तुम्हें शुद्ध नहीं किया है, हमने आत्म-विशुद्धि प्राप्त नहीं की है। जिनका आत्मा शुद्ध हो जाता है, जो तपश्चर्या द्वारा व निष्काम धर्म की साधना द्वारा या पवित्र सामोपासना द्वारा अपने रोग-द्वेष की मलिनताओं को, नानाविध विषय-वासनाओं की अशुद्धि को और अज्ञान-मल को हटाकर आत्मा को विशुद्ध कर लेते हैं, वे आत्माराम हो जाते हैं। वे अपनी विशुद्धात्मा को पाकर फिर अन्य किसी भी बाह्य वस्तु की अपेक्षा नहीं रखते। तब वे अपनी विशुद्ध आत्मा से जो कुछ माँगते हैं वह सब-कुछ उन्हें मिल जाता है, मिलता रहता है। निःसन्देह हे आत्मन्! तुम शुद्ध हुए हमें सर्वविध ऐश्वर्य दिया करते हो। संसार में जो दानशील, स्वार्थ-त्यागी, उदार पुरुषों को सब रमणीय धन मिल रहे हैं, जो अस्तेयव्रतियों को 'सर्वरत्नोपस्थान' हो रहा है यह सब, हे विशुद्ध आत्मन्! तुम्हारा ही दान है, तुम्हारी ही विशुद्धता का प्रताप है। विशुद्ध हुए तुम तो सब विघ्न-बाधाओं को भी मार भगाते हो, सब पापों का नाश कर देते हो, सब वृत्रों का हनन कर देते हो, सब रुकावटों को दूर कर देते हो और अन्त में, हे शुद्ध इन्द्र! तुम हमें सर्वश्रेष्ठ ऐश्वर्य को, 'वाज' को भी देते हो। इसलिए भाइयो! आओ, अब जब कभी हम अनैश्वर्य से पीड़ित हों या रमणीय धनों को प्राप्त करना चाहें तो हम अपनी आत्मा को शुद्ध करने में लग जाएँ; जब कभी वृत्र के प्रहारों से आक्रान्त हों तो इस आत्मविशुद्धि के हथियार को पकड़ लेवें और जब कभी सर्वोच्च ज्ञानबल की आवश्यकता अनुभव करें तो भी आत्मशुद्धि की ही शरण में जाएँ, आत्मशुद्धि का ही आश्रय ग्रहण करें।

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

नागरिकता संशोधन अधिनियम - 2019 पर मुस्लिमों की शातिर मानसिकता

नागरिकता बिल का प्रस्तावित संशोधन लोकसभा और राज्यसभा में बहुमत से पारित होने के बाद देश में मुसलमानों का एक बड़ा तबका हिंसा और उपद्रव पर उतारू है। दिल्ली समेत देश के कई हिस्सों में हिंसा का तांडव देखने को भी मिला। मुसलमान चाहते हैं कि प्रस्तावित संशोधन बिल में मुस्लिमों को भी शमिल किया जाये क्योंकि भारत के संविधान में सभी नागरिक समान हैं, हमारा संविधान किसी नागरिक के साथ कोई भेदभाव नहीं करता है। माना कि भारतीय संविधान सभी को समान अधिकार प्रदान करता है लेकिन मोदी सरकार के पिछले कार्यकाल के दौरान जब तीन तलाक पर सरकार बिल लेकर आई थी तब मुसलमानों की ओर से कहा गया था कि मुसलमानों के लिए संविधान से बड़ा शरिया कानून है और भारत सरकार उनके शरिया कानून में हस्तक्षेप न करे।

आज दो सवाल देश के सामने खड़े हैं कि भारत के मुस्लिमों को संविधान चाहिए या शरियत कानून? क्योंकि एक समय पर दोनों चीजें विवादास्पद बनी रहेंगी और भारत की न्याय व्यवस्था को अपने पक्ष में करने को दबाव की राजनीति में माहिर रहे कट्टर लोग हिंसा करते रहेंगे। तीन तलाक पर आये कानून के बाद ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड के नेताओं ने देश भर में 'शरीयत कोर्ट' की स्थापना की घोषणा की थी। जबकि यह राष्ट्रीय संविधान की भावना के विरुद्ध थी लेकिन फिर भी कांग्रेस के कई नेताओं ने इसका समर्थन किया था।

वर्तमान स्थिति को देखें तो तर्क और तथ्य बताते हैं कि गत सदी से भारतीय राजनीति की मूल समस्या जस-की-तस अनसुलझी ठहरी हुई है। 1947 से पहले देखें तो नए दौर के अंत में हिन्दू नेता पहले के हिन्दू राजाओं की तुलना में धार्मिक, चारित्रिक रूप से दुर्बल-खोखले साबित हुए थे क्योंकि स्वामी दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, जैसे मनीषियों की शिक्षा और चेतावनियों की उपेक्षा कर हिन्दू नेताओं ने देश का एक हिस्सा इस्लाम को सौंप देना स्वीकार कर लिया और कारण बताया गया कि मुस्लिमों को शरियत चाहिए और हमें संविधान।

बंटवारा हुआ दो देश बने, एक में संविधान का शासन हुआ दूसरे में शरियत का, इसके बाद हम आगे बढ़ते रहे, लेकिन भारत में बचें मुस्लिमों की जैसे ही संख्या और राजनितिक शक्ति बढ़ी उन्होंने कई चीजों में अपने मजहब का हवाला देकर नए इस्लामी नेता कह उठे कि यदि 'शरीयत कोर्ट' नहीं देते तो 'हमारा अलग देश दे दो। सरकारें झुकीं और कई मामलों में फिर शरीयत दे दी गयी। जबकि डॉ आंबेडकर ने एक मौके पर कहा था कि मुस्लिमों की चाह हनुमानजी की पूंछ की तरह बढ़ती जाती है। उन्होंने झूठी शिकायतों, आन्दोलनों हिंसाओं को मुस्लिम राजनीति की तकनीक बताकर इसे एक नाम दिया था। 'फरेबी राजनीति' यानी, झूठी शिकायतें करके सत्ता और कब्जे की ओर बढ़ना। यह सब आज फिर दिख भी रहा है। यह सब डॉ. आंबेडकर ने 1940 में लिखा था आज भी विभिन्न मुस्लिम नेता उसे प्रमाणित कर रहे हैं। इस में कुछ नया नहीं है।

बंटवारे के सात दशक पहले वाली इस्लामी अलगाववादी भाषा फिर सुनाई पड़ रही है। पर आज भी हिन्दू नेता यह नहीं जानते कि क्या करें? ये आज भी ऐसे ही असहाय लग रहे हैं जैसे 1947 में थे, जब मुट्ठीभर इस्लामी नेताओं और उनके समर्थक कम्युनिस्टों ने देश-विभाजन करा डाला था। आज हिन्दू नेताओं में यह कहने का साहस नहीं है कि मुसलमानों की सभी शिकायतों के एकमुश्त समाधान के लिए ही 1947 में देश-विभाजन हुआ था। जबकि इस सच्चाई को डॉ. आंबेडकर ने बखूबी समझा था और हिन्दुओं को चेतावनी दी थी कि मुस्लिम राजनीति मुल्लाओं की राजनीति है और वह मात्र एक अंतर को मान्यता देती है, हिन्दू और मुसलमानों के बीच मौजूद अंतर।

संविधान चाहिए या शरियत ?

....विभाजन को स्वीकार के लिए हिन्दू जनता को स्वयं नेहरू ने यही तर्क व ढांढ़स दिया था कि इस से 'मुस्लिम समस्या' सदा के लिए खत्म हो जाएगी। बात-बात में मुसलमानों के सीधे हमलों और दंगों से हिन्दुओं को मुक्ति मिलेगी। हम एक संविधान के देश में रहेंगे। खैर बंटवारा हुआ 10 लाख से ज्यादा लोग मारे गये। मुस्लिम लीग को वोट करने के बाद अधिकांश मुस्लिम यही जमे रह गये। स्वतंत्र भारत में कांग्रेस और दूसरी पार्टियां मुसलमानों को बढ़-चढ़कर अधिक सुविधा, अधिकार देती रहीं। संविधान को भुलाकर शिक्षा, राजनीति, कानून, आदि में इस्लामी अलगाव का सम्मान, अंतरराष्ट्रीय इस्लामी मांगों को समर्थन, इस्लामी देशों के प्रति झुकी विदेश-नीति आदि उसके बड़े उदाहरण थे।....

जीवन के किसी पंथनिरपेक्ष तत्व का मुस्लिम राजनीति में कोई स्थान नहीं, और वे मुस्लिम राजनीतिक जमात के केवल एक ही निर्देशक सिद्धान्त के सामने नतमस्तक होते हैं, जिसे मजहब कहा जाता है। उन्होंने कहा था कि मुस्लिम राजनीति हिन्दुओं के साथ बराबरी नहीं, बल्कि वर्चस्व के लक्ष्य से प्रेरित है।

एक बार फिर वही दिख रहा है। यहां के सभी मुसलमानों के लिए पाकिस्तान बना था, जिस के लिए उन्होंने मुस्लिम लीग को वोट दिया था। विभाजन को स्वीकार करने के लिए हिन्दू जनता को स्वयं नेहरू ने यही तर्क व ढांढ़स दिया था कि इस से 'मुस्लिम समस्या' सदा के लिए खत्म हो जाएगी। बात-बात में मुसलमानों के सीधे हमलों और दंगों से हिन्दुओं को मुक्ति मिलेगी। हम एक संविधान के देश में रहेंगे। खैर बंटवारा हुआ 10 लाख से ज्यादा लोग मारे गये। मुस्लिम लीग को वोट करने के बाद अधिकांश मुस्लिम यहीं जमे रह गये। स्वतंत्र भारत में कांग्रेस और दूसरी पार्टियां मुसलमानों को बढ़-चढ़कर अधिक सुविधा, अधिकार देती रहीं। संविधान को भुलाकर शिक्षा, राजनीति, कानून, आदि में इस्लामी अलगाव का सम्मान, अंतरराष्ट्रीय इस्लामी मांगों को समर्थन, इस्लामी देशों के प्रति झुकी विदेश-नीति आदि उसके बड़े उदाहरण थे।

अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय जो पाकिस्तान आंदोलन का केंद्र था, उसे खत्म करने के बदले विशेषाधिकार प्राप्त विश्वविद्यालय बना दिया गया! आज फिर मुस्लिम शिकायतें इतनी बढ़ गईं कि अब फिर अलग देश की मांग, शरियत कानून की मांग इसी से उठ रही हैं। और कमाल देखिये इन मुस्लिम नेताओं को फटकारने के बजाय कांग्रेसी नेता हिन्दुओं को ही बुरा-भला कह रहे हैं, जैसे गांधीजी हिन्दू महासभा या वीर सावरकर को कहते थे।

- जारी पृष्ठ 7 पर

विश्वस्तर पर पादरियों के कुकृत्यों की पड़ताल

कैथोलिक चर्च के शिकारी पादरी

....कमाल देखिये पादरियों द्वारा की जा रही इन सब शर्मनाक करतूतों के बाद भी पोप फ्रांसिस ने आयरलैंड की अपनी यात्रा के दौरान ये तो कहा कि यह शर्मनाक और दुखद घटनाएँ लेकिन उन्होंने पादरियों को सुधारने के और दंड देने की आवश्यकता को समझने का कोई संकेत नहीं दिया। उसी समय अमरीका और यूरोप के लोग पोप के दरबार में गुहार लगा रहे थे कि हमें अपने बिशपों-पादरियों के यौन शोषण से बचाओ, तुम्हारा चर्च ऊपर से नीचे तक पाप में डूबा हुआ है। .....

....आज पोप फ्रांसिस दावा कर रहे हो कि लम्पट पादरियों के सभी कारनामें सार्वजनिक किये जायेंगे लेकिन यह अभी अविश्वसनीय है, वषों से दबाएँ जा रहे सभी गुनाहों की जांच जब सामने आएगी तो वेटिकन में हिमस्खलन पैदा होगा।.....

एक बार फिर पोप फ्रांसिस ने ऐलान किया है कि नाबालिगों के यौन शोषण से जुड़े मामलों में पोप संबंधित मामलों की गोपनीयता का नियम लागू नहीं होगा। इससे पहले चर्च में यौन शोषण के मामलों पर अक्सर पर्दा डाल दिया जाता था। अब जो लोग अपने साथ उत्पीड़न होने की शिकायत करते हैं या कहते हैं कि वो पीड़ित रहे हैं, उनपर ये पाबंदी नहीं रहेगी। पोप का यह बयान उस भूचाल से जोड़कर देखा जा रहा है जब पिछले दिनों दुनियाभर में पादरियों द्वारा यौन उत्पीड़न की हजारों रिपोर्टें आने लगी थीं और वरिष्ठ पादरियों पर इस तरह के मामलों को छिपाने के आरोप लगे थे।

पोप के बयान को अगर आसान भाषा में समझें तो चर्च अपने लम्पट पादरियों के कारनामों को जगजाहिर करेगा। क्योंकि भारत समेत दुनिया भर में चर्च के पादरियों द्वारा नन से लेकर कान्वेंट में मासूम बच्चों को अपनी हवस का शिकार बनाकर मामलों को दबा दिया जाता रहा है। एक समय आयरलैंड धार्मिक ईसाइयों लिए स्वर्ग था, और कैथोलिक चर्च उस स्वर्ग संगीत। किन्तु यह संगीत जब पिछले तीन दशकों में मासूम बच्चों की चीखों और सिसकियों में बदलने लगा, पीड़ित नन तथा बच्चों के परिवार सड़कों पर उतरें तो आयरलैंड सरकार ने जाँच हेतु रयान आयोग का गठन किया। रयान आयोग ने साल 2009 में अपनी 2600 पन्नों की रिपोर्ट प्रकाशित की इस रिपोर्ट के अनुसार सरकारी निरीक्षण और पर्यवेक्षण के बावजूद, कैथोलिक पादरियों ने दशकों तक हिंसक रूप से हजारों बच्चों का यौन एवं शारीरिक शोषण किया था।

रिपोर्ट में पाया गया कि अनाथालयों और कान्वेंट स्कूलों में बच्चों को गुलाम समझा जाता है। कुछ मामलों में तो अनेकों बच्चों को सेक्स गुलाम बनाया गया। एक संस्था मैग्डलीन लॉन्ड्रीज जहां लड़कियों और महिलाओं को जबरदस्ती रखेल बनाकर रखा गया था। इन संस्थानों की सही हालत का ब्यौरा देते हुए साल 2017 में एक सरकारी रिपोर्ट में बताया गया था कि 1925 से 1961 तक, मदर एंड बेबी होम, जैसी कई संस्थाओं में लगभग 800 बच्चों की मौतें हुई थी। जिनको बड़े पैमाने पर कब्रों या गड्ढों में दबा दिया गया था। इस कांड में न केवल पादरी शामिल थे बल्कि अनेकों नन की भी सहभागिता पाई गयी थी।

कैथोलिक यौन-शोषण कांड की लहर जब आयरलैंड की सड़कों पर उठी तो अगस्त 2018 में, पोप ने आयरलैंड में एक के बाद कई धार्मिक यात्राएँ की। परन्तु उसी दौरान इस चिंगारी को हवा देते हुए जर्मनी के एक बिशप ने दूसरा खुलासा कर दिया कि 1946 से 2014 तक, 1670 पादरियों ने 3677 बच्चों का यौन तथा शारीरिक शोषण किया था। उक्त खुलासों से आहत अन्य देशों के नागरिक भी चर्च को बंद करने के लिए आक्रामक तरीके से आगे आने लगे। क्योंकि संयुक्त राज्य अमेरिका में, 2018 में पेंसिल्वेनिया ग्रैंड जूरी ने आरोप लगाया कि 70 वर्षों के दौरान, अमेरिका में 300 से अधिक पादरियों द्वारा 1,000 से अधिक बच्चों के साथ यौन शोषण किया गया था। किन्तु वेटिकन चर्च के अधिकारियों ने पीड़ितों को सफलतापूर्वक चुप करा दिया था। लेकिन उसी दौरान एक अन्य घटना का खुलासा हुआ कि आरोपों में लिप्त अनेकों पादरी जीसस का इस्तेमाल कर रहे थे। यानि पीड़ित शोषित बच्चों को एक सोने के क्रॉस का उपहार दिया जाता था ताकि दूसरे शिकारी पादरी को पहचान हो सकें कि यह अपने यौन शोषण का विरोध नहीं करेगा।

कमाल देखिये पादरियों द्वारा की जा रही इन सब शर्मनाक करतूतों के बाद भी पोप फ्रांसिस ने आयरलैंड की अपनी यात्रा के दौरान ये तो कहा कि यह शर्मनाक और दुखद घटनाएँ लेकिन उन्होंने पादरियों को सुधारने के और दंड देने की आवश्यकता को समझने का कोई संकेत नहीं दिया। उसी समय अमरीका और यूरोप के लोग पोप के दरबार में गुहार लगा रहे थे कि हमें अपने बिशपों-पादरियों के यौन शोषण से बचाओ, तुम्हारा चर्च ऊपर से नीचे तक पाप में डूबा हुआ है।

कहने को आज दुनिया भर में 2,00,000 से अधिक कैथोलिक स्कूल और लगभग 40,000 कैथोलिक अस्पताल और स्वास्थ्य सुविधाएं हैं, जो ज्यादातर विकासशील देशों में हैं। यानि इस समय देखा जाये तो वेटिकन चर्च पृथ्वी पर सबसे बड़ा गैर सरकारी संगठन है, जो गरीबों की देखभाल करने का दावा करता है बीमारों को ठीक करते हैं। एक पल को इस संस्था का यह कार्य देखकर मन में चर्च की महानता का ख्याल आते ही दूसरी तरफ चर्च के कुकृत्य सामने खड़े होने लगते हैं। साल 2010 न्यूयार्क टाइम्स में छपी एक खबर के अनुसार 90 के दौर में एक मामला पादरी लॉरेंस मर्फी को लेकर उठा था। पादरी पर आरोप था कि उन्होंने 230 ऐसे बच्चों का यौन शोषण किया जो मूक बधिर थे। मामला अखबारों में उठने के बावजूद भी पोप की बेशर्मी देखिये कि वर्तमान पोप ने इस मामले पर कोई कदम नहीं उठाया था।

ऐसा माना जाता रहा है कि जब मनुष्य का मन भोग-विलास से भर उठता है तो वह अध्यात्म की और मुड़ता है। भारत देश में बहुत सारे उदहारण सुनने देखने को मिलते हैं। परन्तु ईसाई समुदाय के अन्दर चर्चों के पादरियों को झांककर देखे तो लगता है जैसे इनके जीवन का उद्देश्य प्रार्थना उपासना के बजाय सिर्फ यौन शोषण ही रह गया हो। केवल यूरोप ही नहीं भारत में हर महीने पादरियों द्वारा किये जा रहे कान्वेंट स्कूलों में बच्चों और नन के शोषण की घटनाएँ आम हो चुकी है। इसके अलावा आस्ट्रेलिया भी इन शिकारी पादरियों के चंगुल से अछूता नहीं है। ऑस्ट्रेलिया में धार्मिक और गैर धार्मिक जगहों पर होने वाले यौन शोषण की जांच करने की सबसे शीर्ष संस्था रॉयल कमीशन के अनुसार यौन शोषण की पीड़ितों की कहानियां काफी अवसाद भरी हैं। जिसमें बच्चों की उपेक्षा की गई, उन्हें सजा भी दी गई, आरोपों की जांच नहीं हुई, नतीजन पादरी और आसानी से बच गए। संस्था के अनुसार 1980 से 2015 के बीच ऑस्ट्रेलिया के 1000 कैथोलिक इंस्टीट्यूशनों में 4,444 बच्चों का यौन उत्पीड़न हुआ। इन बच्चों की औसत आयु लड़कियों के लिए 10.5 साल रही है, वहीं लड़कों की 11.5 साल। बच्चों के यौन शोषण से जुड़े मामलों पर नजर रखने वाली रॉयल कमीशन के पास 1980 से 2015 के बीच करीब 4,500 लोगों ने यौन शोषण होने की शिकायत दर्ज कराई थी।

भले ही आज पोप फ्रंसिस दावा कर रहे हों कि लम्पट पादरियों के सभी कारनामें सार्वजनिक किये जायेंगे लेकिन यह अभी अविश्वसनीय है, वषों से दबाएँ जा रहे सभी गुनाहों की जांच जब सामने आएगी तो वेटिकन में हिमस्खलन पैदा होगा। क्योंकि इन लम्पट पादरियों के लिए एक बड़ा अपराध आयोग बनाना पड़ेगा जो वेटिकन के चेहरे से मासूमियत का खोल उतार फेंकेगा। – ***राजीव चौधरी***

प्रेरक प्रसंग

कृतज्ञता तथा अकृतज्ञता

कृतज्ञता के भाव से विभूषित मनुष्य जीवन में उन्नति करता हैं और आगे बढ़ता है। इसके विपरीत आचरण करने से जीवन में हानि ही होती हैं। आर्यसमाज के यशस्वी विद्वान् आचार्य श्री भद्रसेनजी अजमेरवाले अपने जीवन के अन्तिम वर्षो में बड़े रुग्ण रहे। वे इस दृष्टि से बड़े भाग्यशाली थे कि उनके पुण्य कर्मो के फलस्वरूप उन्हें सुयोग्य तथा आज्ञाकारी सन्तान मिली। उनके सुपुत्रों ने वृद्धावस्था में उनकी बहुत सेवा की।

आचार्यजी को कम्पन का रोग हो गया था। एक दिन उनके सुपुत्र कैप्टन देवरत्नजी ने हँसी-विनोद में उनसे प्रश्न किया, ''पिताजी आपने इतनी योगविद्या सीखी, जीवनभर उसका अभ्यास करते रहे, सैंकड़ों लोगों के रोगों का निदान किया फिर आपका शारीरिक स्वास्थ्य ऐसा क्यों हो गया?''

आचार्यजी ने कहा, ''पहले भी कई व्यक्तियों ने यह प्रश्न पूछा है।'' आचार्यजी ने गम्भीर मुद्रा में बताया कि उन्होंने चार वर्ष तक स्वामी कुवलयानन्द जी से योग विद्या सीखी। आश्रम भी आचार्यजी ही सँभालते थे। जब गुरु से विदा होने लगे तो गुरुजी ने कहा कि वे तो आचार्यजी को ही आश्रम सौंपना चाहते हैं, परन्तु शिष्य ने कहा कि वह तो जीवन का लक्ष्य वेद-प्रचार, ऋषि मिशन की सेवा बना चुके हैं। गुरुजी ने बड़ा आग्रह किया, परन्तु आचार्य भद्रसेनजी का एक ही उत्तर था कि उनके जीवन का लक्ष्य ऋषि दयानन्द के मिशन की सेवा है और कोई कार्य नहीं।

आचार्यजी का कथन था कि चार वर्ष जिससे योगविद्या सीखी, जिसे गुरु माना, उसकी बात न मानकर, मैंने उनके मन को कितना दु:ख दिया, यह रोग तथा मेरी यह अवस्था उसी का परिणाम है।

यह तो है इस घटना का एक पक्ष। यह है एक पूज्य विद्वान् के मन में अपने योग-गुरु के प्रति कृतज्ञता का भाव।

अब इसके आगे की कहानी सुनिए। आचार्यजी ने कहा, ''इन पाँच वर्षो में किसी आर्यसमाजी ने आकर मेरी सुध नहीं ली। यदि आप लोग (सन्तान) सुयोग्य, शिष्ट व सुपात्र न होते, तुम लोग मेरी सेवा न करते तो मैं किसी एक मकान के एक कमरे में पड़ा-पड़ा सड़-सड़कर मर जाता।''

ये शब्द प्रत्येक सहृदय व्यक्ति को झकझोर देनेवाले हैं। आर्यसमाज के लोगों को अपनी इस कमी को दूर करना चाहिए। जो संस्था, जो देश, जो समाज अपने सेवकों के दु:ख का भागीदार नहीं बनता, वृद्धावस्था में उनकी सुध नहीं लेता, उसे अच्छे सेवकों व सपूतों से वंचित होना पड़ता है। पूज्य पुरुषों की सुध न लेना कृतज्ञता के अभाव को प्रकट करना है।

– ***प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु***

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

प्रथम पृष्ठ का शेष

के दिशा-निर्देशन में हुआ।

शोभायात्रा के विहंगम दृश्य : आर्यों की यह विशाल शोभायात्रा स्वामी श्रद्धानंद बलिदान भवन नया बाजार से शुरू होकर लाहौरी गेट, खारी बावली चौंक, फतेहपुरी, कटरा बनियन, लाल कुंआ चौंक, होज काजी होते हुए अजमेरी गेट के बाद लगभग 3 किलोमीटर का सफर तय करके 12:40 बजे रामलीला मैदान पहुंची। किंतु शोभायात्रा के विहंगम दृश्य आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती, स्वामी श्रद्धानंद और सभी महापुरुषों के प्रति सच्ची निष्ठा की कहानी बयां कर रहे थे। इस अवसर पर लगभग दिल्ली की समस्त आर्य समाजें, आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश, आर्य वीरांगना दल, समस्त गुरुकुल, अनाथालय, आर्य विद्यालय इत्यादि सभी आर्य संस्थाओं से हजारों की संख्या में आर्यजन शोभायात्रा में सम्मिलित थे। चार आर्य विद्यालयों द्वारा आयोजित सुंदर व प्रेरक झांकिंया शोभायात्रा का विशेष आकर्षण बनी। आर्य वीरांगना दल एवं आर्य वीर दल के सभी बच्चे-बच्चियां अपने गणवेश में अनुशासित और व्यवस्थित होकर शक्ति प्रदर्शन करते रहे। जिसमें लाठियां, तलवार और योगासन आदि के प्रेरक करतव शामिल थे। सभी के हाथों में नागरिक संशोधन समर्थन की तख्तियां, वैदिक जयघोष, वेदमंत्रों की सूक्तियां और आर्य समाज के जयघोष दिखाई दे रहे थे। चारों तरफ ईश्वर भक्ति, देश भक्ति और ऋषि भक्ति का वातावरण नजर आ रहा था। बस, ट्रैंपों, ट्रक, बाईक, कार आदि वाहनों पर ओ३म् के ध्वज और बैनर सजे हुए थे। इस अवसर पर महर्षि दयानंद पब्लिक स्कूल आर्य समाज शादी खामपुर, आर्य शिशुशाला, आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश, आर्य गुरुकुल तिहाड़ गांव, गुरु विराजनंद संस्कृतकुलम, आनंद विहार हरिनगर, आर्य समाज प्रीत विहार तथा आर्य समाज कीर्ति नगर के आर्यजनों ने विशेष झांकिया और पूरे रास्ते यज्ञ का आयोजन किया। आर्य

रोशनी से जगमगाता श्रद्धानन्द बलिदान भवन - बलिदान दिवस के अवसर पर यज्ञ करते आर्य नर-नारी

सार्वजनिक सभा में स्वामी श्रद्धानन्द जी को श्रद्धांजलि देते हुए गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति डॉ. सत्यपाल सिंह, डी.ए.वी. के महामन्त्री श्री एस. के. शर्मा, आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के पूर्व प्रधान श्री रमेश गुप्ता, डॉ. विनय विद्यालंकार, दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, सुश्री मोनिका अरोड़ा, आर्य केन्द्रीय सभा के व. उप प्रधान श्री सुरेन्द्र रैली, महामन्त्री श्री सतीश चड्डा जी एवं सभा को सम्बोधित करते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य।

श्री एस. के. शर्मा जी को सम्मानित करते पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी।

एम.डी.एच. के 100 वर्षगांठ पर आयोजित कार्यक्रम में आर्यजनों को आमन्त्रित करते महाशय धर्मपाल जी, श्री प्रेम अरोड़ा जी एवं श्री राजेन्द्र जी।

नागरिक संशोधन अधिनियम-2019 के समर्थन में हस्ताक्षर करते आर्यजन।

श्रीमती नीरज मैंदीरत्ता जी को वेद प्रकाश कथूरिया स्मृति पुरस्कार से सम्मानित करते डॉ. सत्यपाल सिंह, श्रीमती उषाकिरण आर्या, एस. के. शर्मा, अरुण प्रकाश वर्मा, कृपाल सिंह व सतीश चड्डा

श्री शिवशंकर शास्त्री जी को श्री लखमीचन्द भूरों देवी स्मृति पुरस्कार से सम्मानित करते श्री योगेश आर्य जी, जोगेन्द्र खट्टर जी एवं अजय सहगल।

आचार्य कल्पना जी को महात्मा प्रभुआश्रित स्मृति पुरस्कार से सम्मनित करतीं आर्य केन्द्रीय सभा की उप प्रधाना श्रीमती उषाकिरण आर्या, श्रीमती मोनिका अरोड़ा

स्वामी श्रद्धानन्द जी के 93वें बलिदान दिवस पर आयोजित शोभायात्रा के विहंगम दृश्य

दिल्ली के ऐतिहासिक रामलीला मैदान में आयोजित सार्वजनिक सभा में आर्यनेता, राजनेता एवं संन्यासीवृन्दों सहित दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों एवं शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों और सदस्यों की ओर से दी गई स्वामी श्रद्धानन्द जी को भावपूर्ण श्रद्धांजलि। इस अवसर पर प्रेरक उद्बोधन, पुस्तक विमोचन एवं नाटक मंचन तथा उपस्थित आर्यजनों का विशाल जनसमूह

Continue from last issue

Vanaprastha and Sannyasa

Vanaprastha: After completing the age-and duties of a householder as a familyman, one must become Vanaprasthi lateron becoming *Sannyasi* at right time. Only the calm and scholarly people can feel the joy of finding the Supreme God, by leading a religious and righteous life and living on the collected alms. A *Vanaprasthi* ought to strive, to attain faith, truth and piety, through penance, *Yoga,* and *Satsanga* in various ways. He must lead a life of celibacy and abstinance, eventhough remaining with his wife. He must send away his wife to his sons, etc., when- ever he desires to enter in the last Ashrama, i.e. *Sanyasa.* The age interval for this stage is between 50 and 75 years.

Sannyasa: After completing the age of 75, a man should enter *Sanyasa* in the fourth and last quarter of his life, though he may enter it earlier only if he has really *Vairagya,* i.e. non-involvement and desireless state of mind. Even a householder or a *Brahmachari* can also .enter *Sanyasa* directly in such an event, A Brahmachari should become *Sannyasi,* only if he is a thorough scholar, restrained, nondesirous, as also over flowing with the desire of service of mankind.

The worldly pleasure accrue from our acts and deeds, but to find the ultraworldly and supreme bliss, as well as union with Supreme Self, they do not suffice. For that, a dedicated and specialistic way of life is required, for which such a desirous entrant should approach the scholars of the highest order, who know the ultimate reality, i.e.God, and who alone can satisfy his querries and doubts. After attaining Sannyas, he must preach the truth to the worldly people, because he alone has the sufficient time at his leisure for this purpose. He must not stay for long at a place, unless a particular purpose of benefaction of the people at large is served only in this way. He must not collect money, though he must have sufficient money in his hand for his knowledge-provoking tours. A true Sannyasi always preaches the religion, which he practises in his own pious life.

To be continued.....

With thanks By:
"Flash of Truth"

पृष्ठ 4 का शेष

समाज कीर्ति नगर की झांकी पर आर्य महिलाएं व पुरुष यज्ञ करते हुए और प्रसाद बांटते हुए आगे बढ़ रहे थे। यह सब सुंदर नजारा देखने के लिए सड़कों के चारों तरफ लोगों की लंबी-लंबी कतारें थी।

शोभायात्रा का स्वागत : विभिन्न आर्य समाजों द्वारा बीच-बीच में शोभायात्रा का उत्साहपूर्वक स्वागत किया गया। जिनमें आर्य समाज सुदर्शन पार्क, ग्रेन मर्चेंट एसो. नया बाजार, आर्य समाज नया बांस, महाशियां दी हट्टी, आर्य समाज पुलबंगश, श्री अशोक अरोड़ा कटरा बनियन, आर्य समाज सीताराम बाजार एवं अन्य कई एसोसेशनों ने शोभायात्रा में भाग लेने वाले सभी नर-नारियों का प्रसाद वितरण कर स्वागत किया। यह शोभायात्रा लगभग 12:40 बजे रामलीला मैदान के प्रांगण में पहुंच कर एक वृहद सार्वजनिक सभा के रूप में परिवर्तित हो गई।

सार्वजनिक सभा के प्रमुख बिंदु : स्वामी श्रद्धानंद जी को उनके 93वें बलिदान दिवस पर श्रद्धांजलि देने के लिए ऐतिहासिक रामलीला मैदान आर्यजनों से खचाखच भरा हुआ था। विशाल मंच पर अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानंद जी की प्रेरक चित्र शोभायमान था। मंच के दोनों तरफ बड़े-बड़े बैनर लगे हुए थे। जिन पर स्पष्ट लिखा था कि नागरिक संशोधन अधिनियम का आर्य समाज समर्थन करता है। भजनोपदेशक श्रीमती सुदेश आर्य, संगीताचार्य ने अपने भजनों के माध्यम से प्रभु भक्ति, वेद मंत्र, महर्षि दयानंद जी के गुणगान और स्वामी श्रद्धानंद जी के श्रद्धांजलि स्वरूप भजन गाए। सभा के आरंभ में श्री सतीश चड्डा, महामंत्री आर्य केंद्रीय सभा एवं वरिष्ठ उपप्रधान श्री सुरेंद्र रैली जी ने ओ३म् का उच्चारण करके स्वामी श्रद्धानंद जी को सामूहिक श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर मंच पर पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी, प्रधान आर्य केंद्रीय सभा, श्री धर्मपाल आर्य जी, प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, डॉ. सत्यपाल सिंह जी, सासंद बागपत लोकसभा, श्री एस.के.शर्मा. जी महामंत्री प्रादेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, श्रीमती मोनिका अरोड़ा जी, वरिष्ठ वकील सुप्रीम कोर्ट, श्री सत्यानंद आर्य, श्री वागीश शर्मा, श्री विनय आर्य जी, महामंत्री दिल्ली सभा, श्री रमेश गुप्ता जी, आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका, श्री अजय सहगल जी, (टंकारा ट्रस्ट) श्री विनय विद्यालंकार जी, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखंड, श्री अरुण प्रकाश वर्मा जी, श्री योगेश आर्य जी, श्री विक्रम नरुला जी सहित संन्यासीवृन्द विराजमान थे।

उद्बोधन

नागरिक संसशोधन कानून का पूर्ण समर्थन करता है आर्य समाज-विनय आर्य

सर्वप्रथम श्री विनय आर्य जी ने स्वामी श्रद्धानंद जी के द्वारा मानव जाति पर किए गए उपकारों को स्मरण करते हुए कल्याण मार्ग का पथिक और मेरे पिता एवं हिंदू संगठन आदि पुस्तकों के विषय में निवेदन करते हुए कहा कि ये पुस्तक केवल पुस्तक नहीं है अपितु कल्याण मार्ग का पथिक स्वामी श्रद्धानंद जी द्वारा लिखित उनकी आत्मगाथा है। मेरे पिता स्वामी जी के सुपुत्र श्री इंद्र जी द्वारा लिखित और हिंदू संगठन स्वयं स्वामी श्रद्धानंद जी द्वारा लिखित ऐसी प्रेरक पुस्तकें है जिनको पढ़कर हम आर्य समाज के उद्देश्यों को पूर्ण करने के लिए प्रेरणा प्राप्त कर सकते है। विनय जी ने इन पुस्तकों को खरीदने के लिए सभी आर्यजनों का आहवान किया। विशेष रूप से विनय जी ने मंच से घोषणा करते हुए कहा कि भारत सरकार द्वारा नागरिक संसशोधन कानून बनाए जाने का आर्य समाज पूर्ण रूप से समर्थन करता है और सभी आर्यजनों ने ओम् ध्वनि के साथ इस कानून का पुरजोर समर्थन किया। इस अवसर पर हजारों आर्यजनों ने नागरिक संसशोधन कानून के लिए हस्ताक्षर भी किए।

आर्यसमाज के हर कार्यक्रम में सहभागी होगा डी.ए.वी. - एस.के.शर्मा

स्वामी श्रद्धानंद को श्रद्धांजलि देते हुए डी.एव.वी. मैनजिंग कमेटी के प्रधान श्री पूनम सूरी जी की ओर से श्री एस.के. शर्मा जी महामंत्री प्रादेशिक सभा ने श्री पूनम सूरी जी के विचार व्यक्त करते हुए कहा कि श्री पूनम जी इस सभा में अवश्य आना चाहते थे लेकिन किन्हीं आवश्यक कार्यों से उन्हें बिहार जाना पड़ा। इसलिए उनकी ओर से मैं कहना चाहता हूं कि वे आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में हर तरह से सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। उनकी पूनम की पाठशाला में किस तरह से आर्य समाज को आगे बढ़ाया जाए और नौजवानों को यज्ञ, योग, स्वाध्याय से जोड़ा जाए इसकी प्रमुखता रहती है। उनका कहना है कि डी.ए.वी संस्था में यज्ञशाला बने और प्रतिदिन यज्ञ किया जाए। भविष्य में जो भी कार्यक्रम आर्य समाज का होगा उसमें डी.एव.वी की सहभागिता अवश्य होगी।

कल्याण मार्ग का पथिक का स्वाध्याय करें - विनय विद्यालंकार

सार्वजनिक सभा के मुख्य वक्ता श्री विनय विद्यालंकार जी ने स्वामी श्रद्धानंद जी का पुण्य स्मरण करते हुए उनके जीवन से जुड़ी कई विशेष बातों का मार्मिक वर्णन किया और सभी आर्यजनों को स्वामी श्रद्धानंद जी से प्रेरणा लेने की बात कहीं। श्री विनय विद्यालंकार जी ने आर्यजनों से निवेदन किया कि जहां आप वेद, सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका और अन्य आर्ष ग्रंथों का स्वाध्याय करते है। वहीं कल्याण मार्ग का पथिक का स्वाध्याय करें। इस पुस्तक से स्वामी श्रद्धानंद का संदेश, उपदेश और प्रेरणा प्राप्त होगी।

पूर्ण हो रही है स्वामी श्रद्धानंद की कामना - धर्मपाल आर्य

दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने स्वामी श्रद्धानंद जी को श्रद्धांजलि देते हुए अपने उद्बोधन में कहा कि आज स्वामी श्रद्धानंद की कामना पूर्ण हो रही है। अछूतों को गले से लगा हिंदुओं वरना ये गैरों के हो जाएंगे, स्वामी श्रद्धानंद जी द्वारा संचालित शुद्धि आंदोलन, पिछड़ों को गले लगाने की भावना, देश की स्वाधीनता संग्राम में योगदान और अन्य अनेक सेवा कार्य मानव मात्र के लिए अत्यंत कल्याणकारी सिद्ध हुए। ये समस्त कार्य आर्य समाज निरंतर आगे बढ़ा रहा है। सभी आर्यजनों को संकल्प लेना चाहिए कि हम भी उनके बताए रास्ते पर आगे बढ़ें।

स्वामी श्रद्धानंद के पदचिंहों पर चल रही है भारत सरकार - मोनिका अरोड़ा

सुप्रीम कोर्ट की वरिष्ठ वकील एवं अपनी प्रखर वाणी के लिए विख्यात श्रीमती मोनिका अरोड़ा जी ने स्वामी श्रद्धानंद जी के 93वें बलिदान दिवस पर उन्हें शत-शत नमन करते हुए उद्बोधन में कहा कि वर्तमान भारत सरकार स्वामी श्रद्धानंद के पदचिंहों पर ही चल रही है। नागरिक संसशेधन कानून का हवाले देते हुए श्रीमती मोनिका जी ने अपनी ओजस्वी वाणी में कहा जो लोग तुष्टीकरण की राजनीति करते हैं उन्हें यह अवश्य समझना चाहिए कि जन्म से, वंश से या पंजीकरण से देश का नागरिक होना बहुत जरूरी है। यह कानून बिल्कुल भी जन विरोधी नहीं है। बल्कि भारत के उज्ज्वल भविष्य की साफ तस्वीर है। श्रीमती मोनिका जी ने एन.आर.सी एवं अनेक अन्य सरकार के कार्यों की प्रशंसा करते हुए अपना विस्तृत उद्बोधन देकर आर्यजनों को लाभान्वित किया।

पुण्य भूमि की मिट्टी से तिलक लगाओ माथे पर-डॉ. सत्यपाल सिंह

बागपत लोक सभा से सासंद, मानव संसाधन राज्य मंत्री एवं गुरुकुल कांगड़ी के कुलाधिपति डॉ. सत्यपाल सिंह जी ने इस अवसर पर स्वामी श्रद्धानंद जी के सेवा कार्यों का पुण्य स्मरण करते हुए अपने प्रेरक उद्बोधन में कहा कि गुरुकुल कांगड़ी का कुलाधिपति बनाने के लिए पंजाब, हरियाणा और दिल्ली की तीनों सभाएं पहली बार एक साथ आईं, यह अपने आपमें एक बहुत बड़ी बात है। तीनों सभाएं अपने आपमें अद्भुत और अनुपम हैं। जिस गुरुकुल कांगड़ी को स्वामी श्रद्धानंद ने स्थापित किया उसका कण-कण पवित्र है। गुरुकुल की मिट्टी को माथे पर लगाकर तो देखो उसमें श्रद्धा की खुशबू है। ऐसे स्वामी श्रद्धानंद जिन्होंने अपना सर्वस्व देश को अर्पित कर दिया। मानवता के लिए अपना सब कुछ समर्पित कर दिया। स्वामी श्रद्धानंद को शत-शत नमन।

समाचार पत्रों में विज्ञापन : स्वामी श्रद्धानंद जी का बलिदान 23 दिसंबर को हुआ था। और बलिदान दिवस की शोभायात्रा दिल्ली में 25 दिसंबर को आयोजित की जाती है। 23 से 25 तक राष्ट्र समाचार पत्रों में एम.डी.एच. परिवार व आर्ष प्रचार ट्रस्ट की तरफ से पूरे पेज पर स्वामी श्रद्धानंद जी का चित्र तथा चरित्र का वर्णन किया गया और सभी समाचार पत्रों का मंच से अवलोनक किया गया।

नाटिका मंचन : स्वामी श्रद्धानंद जीका विशाल शरीर और बलवान आत्मा तथा उनके द्वारा किए गए मानव सेवा के

पृष्ठ 6 का शेष

93वें बलिदान दिवस पर ....

कार्य उनकी महान महिमा का यशोगान गाते हैं। इस अवसर पर आर्य समाज कीर्ति नगर में गतिशील आर्य वीर दल की शाखा द्वारा आर्यवीर राजू आर्य के निर्देशन में, एक विशेष नाटिका का मंचन किया गया। जैसे ही यह नाटिका मंच पर प्रारंभ हुई तो सभी लोग ध्यान मगन होकर देखने लगे। किस तरह से ब्रिटिश हुक्मत के टाईम में स्वामी श्रद्धानंद जी ने गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की थी। और वहां पर किस-किस तरह से उस समय का प्रशासन अवरोध पैदा करता था। लेकिन महर्षि दयानंद के अनन्य भक्त स्वामी श्रद्धानंद जी ने इतनी श्रद्धा से कार्य किया कि जो युगों-युगो तक याद किया जाएगा। नाटक में रोलेट एक्ट का विरोध जिसमें स्वामी जी ने संगीनों के सामने छाती खोलकर कहा था चलाओ गोली का भी उल्लेख किया। इस प्रेरणाप्रद नाटिका को देखकर सभी लोग प्रेरित हुए।

सम्मान : इस अवसर पर समाज के कार्यकर्त्ताओं में **श्रीमती नीरज मेदींरत्ता धर्मपत्नी श्री दीपक मेदींरत्ता जी को** श्री वेदप्रकाश कथूरिया स्मृति पुरस्कार, **आ. कल्पना जी व श्री आशीष आर्य सुपुत्र श्री बलवान सिंह ठाकरान** को श्री लख्मी चन्द भूरो देवी स्मृति पुरस्कार व **आ. शिवशंकर चर्तुवेदी सुपुत्र श्री बाल कृष्ण** को महात्मा प्रभु आश्रित स्मृति पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

एम.डी.एच. का निमंत्रण : आर्य समाज के द्वारा किए जाने वाले प्रत्येक आयोजन में अग्रणी भूमिका निभाने वाले सहयोगी एम.डी.एच. कंपनी की 100वीं वर्षगांठ के अवसर पर इंद्रागांधी इंडोर स्टेडियम में आयोजित होने वाले 11 जनवरी 2020 के आयोजन का निमंत्रण स्वयं महाशय धर्मपाल जी ने आर्यजनों को दिया। इस अवसर पर एम.डी.एच. परिवार से प्रेम अरोड़ा जी तथा श्री राजेंद्र जी भी उपस्थित थे। विनय जी ने सभी आर्यजनों से इस कार्यक्रम में भाग लेने का आहवान किया। महाशय धर्मपाल जी ने सभी आर्यजनों को आगे बढ़कर आर्य समाज के कार्यो को करने की प्रेरणा दी और आशीर्वाद दिया। डॉ. विनय विद्यालंकार जी ने शांति पाठ कराया और सभा विसर्जित हुई।

आर्यजनों का धन्यवाद एवं आभार

अपार जनसमूह जो इस विशाल कार्यक्रम में भाग लेने, सुबह-सुबह बिना नाश्ता-भोजन किये आते हैं, उन सबकी भोजन व्यवस्था की सेवा श्री हरिओम बंसल जी व श्री अशोक गुप्ता जी के नेतृत्व में श्री प्रखरदित्य यादव, श्री यश प्रशहार, श्री संजय दुना (नवीन शाहदरा) श्रीमती व श्री रस्तोगी जी (दिलशाद गार्डन), श्री वीरेन्द्र आर्य, श्री सुरिंद्र चौधरी, श्री सुनहरी लाल यादव, एवं इनके साथियों ने की। भोजन व्यवस्था हेतु आर्य समाज रानी बाग द्वारा भोजन सामग्री उपलब्ध करवाई तथा सभी धर्म प्रेमी सदस्यों हेतु जलसेवा श्री नरेंद्र गांधी जी ने तथा श्री चंद्रमोहन कपूर जी ने सूप पिलाकर सबकी थकान कम की। इन सारी व्यवस्थाओं के अतिरिक्त अग्निशमन गाड़ी की व्यवस्था की गई थी तथा माता चननदेवी हॉस्पिटल की एम्बुलेंस भी शोभायात्रा में सेवा हेतु उपलब्ध थी। ताकि यदि कोई अप्रिय घटना घट जाए तो उसका निवारण शीघ्र अतिशीघ्र किया जा सके। डॉ. मुकेश आर्य नया बाजार में खड़े होकर सभी आए साथी व समूह की फोटो व उनकी संस्था का रिकार्ड बना रहे थे और उनके हिसाब से जब शोभायात्रा का झंडा रामलीला मैदान में पहुंचा तब लगभग शोभायात्रा का अंतिम किनारा स्वामी श्रद्धानंद बलिदान भवन के सामने से निकल रहा था। इसमें उनका सहयोग श्री विकास कुमार पंचाल व चरण सिंह (आर्य समाज शाहबाद मोहम्मदपुर) दे रहे थे। बलिदान दिवस की व्यवस्थाओं के लिए सर्वश्री धर्मपाल आर्य, श्री विनय आर्य, राजेन्द्र दुर्गा, कीर्ति शर्मा, अजय सहगल, योगेश आर्य, जोगेंद्र खट्टर, एस. पी. सिंह, हरिओम बंसल, चतर सिंह नागर, आचार्य जय प्रकाश शास्त्री, आ सहदेव शास्त्री, दिनेश शास्त्री तथा अशोक कुमार का विशेष योगदान रहा, सभी दानदाताओं व सहयोगियों का साधुवाद है।

-सतीश चड्डा, महामन्त्री

आत्मकथा का विमोचन

श्री मामचन्द रिवाडिया जी की पुस्तक "आत्म कथा" का विमोचन आर्य समाज अनारकली मंदिर मार्ग नई दिल्ली में डॉ. जे.के.पुरंग की अध्यक्षता में हुआ।

पुस्तक का विमोचन श्री धर्मपाल आर्य प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के कर-कमलों द्वारा किया गया। सर्वप्रथम आर्यसमाज के वरिष्ठ प्रचारक डा. छवि कृष्ण शास्त्री जी ने श्री रिवाडिया जी के सम्बन्ध में बोलते हुए कहा कि मैं इन्हें लगभग 40 वर्षो से जानता हूँ। मैंने इनकी जीवनी को पढ़ा। ये आर्य समाज के निष्ठावान नेता हैं। इन्होंने विदेशों में भी आर्य समाज का प्रचार किया है। आर्य समाज टैगोर गार्डन नई दिल्ली के संस्थापक 10 वर्ष तक मंत्री भी रहे हैं। डी.ए.वी. के 30 वर्ष से कार्यकारिणी के भी सदस्य हैं। इन्होंने 7 पुस्तके भी लिखी हैं। 17 विदेशों की भी यात्रायें की हैं।

अन्त में ब्रिगेडियर अदलखा जी ने सभी का धन्यवाद किया। - *मन्त्री*

गुरुकुल गौतम नगर का
86वां वार्षिकोत्सव एवं चतुर्वेद ब्रह्मपारायण यज्ञ

गुरुकुल गौतम नगर, नई दिल्ली का 86वां वार्षिकोत्सव एवं 40वां चतुर्वेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ 16 दिसम्बर, 2019 से 5 जनवरी, 2020 तक सम्पन्न होगा। समापन एवं भण्डारा 5 जनवरी, 2020 को प्रात: 8 बजे से आरम्भ होगा।

- ***स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, प्राचार्य***

समारोह के मुख्य अतिथि महाशय धर्मपाल जी के सानिध्य में डॉ. उनमावति जी को अध्यात्म मार्तण्ड सम्मान से सम्मानित करते हुए श्री यशपाल आर्य जी, श्रीमती मोहिनी देवी जी, आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी एवं डॉ.महावीर जी

शोक समाचार

आर्यजगत के वरिष्ठ वैदिक उपदेशक आचार्य सत्यानन्द वेदवागीश जी का निधन

आर्यजगत में वेद, व्याकरण, दर्शनशास्त्र और कर्मकाण्ड के मूर्धन्य वैदिक विद्वान आचार्य श्री सत्यानंद वेद वागीश जी का निर्वाण जो 23 दिसम्बर, 2019 की प्रात: 86 वर्ष की अवस्था में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार जयपुर के करणी पैलेस शमशान घाट पर पूर्ण वैदिक रीति से किया गया, जिसमें आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, परोपकारिणी सभा, महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास के पदाधिकारियों ने पहुंचकर उन्हें अन्तिम विदाई दी।

उनकी स्मृति में राष्ट्रीय स्तर पर शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 29 दिसम्बर, 2019 को उनकी कर्मस्थली जोधपुर के महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास के प्राँगण में सम्पन्न होगी।

आर्य नेता श्री राव हश्चिन्द्र आर्य का निधन

आर्य जगत की विभूति और आर्य सम्मान पुरस्कारों द्वारा प्रतिवर्ष अनेक विद्वानों को प्रभूत धनराशि से सम्मानित करके आर्यजगत का गौरव बढाने वाले, अनेक गुरुकुलों, गौशालाओं, अनाथाश्रमों के संरक्षक व पोषक, नागपुर महाराष्ट्र के आर्य उद्योगपति, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तरंग सदस्य आर्यनेता श्री राव हरिश्चंद्र आर्य जी का निधन दिनांक 24-12-2019 को दोपहर 1 बजे नागपुर में हो गया है। उनका अन्तिम संस्कार 25 दिसंबर 2019 को उनके पैतृक गांव बीघोपुर नजदीक नांगल चौधरी जिला महेंद्रगढ़ (हरियाणा) में पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

पृष्ठ 2 का शेष

संविधान चाहिए या शरियत ...

आज भी ऐसा ही देखने को मिल रहा है मुसलमान जान गए हैं कि उत्पात मचाओं अधिकार और सत्ता हासिल करो, इसी कारण उन्हें और, और, और चाहिए जैसे आज इन्हें पाकिस्तान और बांग्लादेश के नागरिक चाहिए। यह मांग नहीं रुकेगी जब तक सब कुछ इस्लामी न हो जाए! यही वह राजनीति-कुशलता है जिसे भूलने के कारण हिन्दू नेता तमाम चढ़ावे चढ़ाकर, बार-बार विभाजन कराकर भी समस्या का समाधान नहीं कर पाएंगे।

क्योंकि पाकिस्तान बन जाने के बाद भारत में रह गए मुसलमानों के लिए शिकायत का कोई आधार नहीं बचता था। लेकिन आज फिर वही समस्या, वही मजहब, वही दादागिरी, वही हिंसा, वही दंगे, आखिर किसलिए कोई जवाब दो? हमें समझाओ कि मुस्लिम लीग को वोट देकर जो मुसलमान यहाँ रह गये थे उनका हमारे ऊपर कैसा अहसान दिखाया जा रहा है। तमाम सेकुलर पार्टियों के हिन्दू नेता और बुद्धिजीवी अपनी सदिच्छाओं और शब्द-जाल में उलझकर सीधी सच्चाई देखना नहीं चाहते! इस भगोड़ेपन का अर्थ इस्लामी नेता अधिक अच्छी तरह समझते हैं। वे अपनी ताकत और दूसरों की कमजोरी का इस्तेमाल जानते हैं। इसीलिए वे लंदन से लेकर दिल्ली तक सत्ताधारियों को झुकाने और अपनी मनमानियां स्वीकार कराने में सफल रहते हैं। यदि भारत हिन्दू-भूमि न रहा, तो उनकी स्थिति भी बदतर होगी। सारी तुलनाएं यह दिखा सकती हैं। अत: भारत की हिन्दू पहचान को बचाना, इस की रक्षा करना पहली प्रतिज्ञा होना चाहिए।

- ***सम्पादक***

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 26-27 दिसम्बर, 2019
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 25 दिसम्बर, 2019

सहयोग द्वारा आर्यसमाज कीर्ति नगर ने किया कंबल वितरण

दीन दुखियों की जिंदगी में सुख-शांति और खुशियों का संचार करने वाली संस्था सहयोग द्वारा 16 दिसंबर 2019 को दीन दयाल उपाध्याय अस्पताल हरिनगर में मरीजों को गर्म कंबल वितरित किए गए। इस अवसर पर आर्य समाज कीर्ति नगर के वयोवृद्ध अधिकारियों ने स्वयं अपने हाथों से कंबलों का वितरण किया। सर्दी से बेहाल हो रही दिल्ली में कंबल पाकर सभी मरीजों ने सहयोग और आर्यसमाज कीर्ति नगर का धन्यवाद किया। - ***सतीश चड्डा, मन्त्री***

प्रतिष्ठा में,

विवाह आदि शुभ अवसरों पर भेंट हेतु तांबे के यज्ञकुण्ड सैट

मूल्य 1100/- रु. मात्र

परिवारों में यज्ञ को बढ़ावा देने के लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से भेंट हेतु 9 पात्रों के यज्ञ कुण्ड के सैट तैयार कराए गए हैं। यह सैट आप किसी भी शुभ अवसर जन्मदिन, वर्षगांठ, विवाह संस्कार या अन्य किसी भी शुभ मौके पर आप किसी भी परिवार को, व्यक्ति को भेंट कर सकते हैं या अपनी संस्था के उत्सवों पर आमन्त्रित अतिथियों को भी भेंट कर सकते हैं। आइए, एक नई परम्परा का शुभारम्भ करें - घर-घर यज्ञ - हर घर यज्ञ की भावना को साकार करें और यज्ञ के प्रचार-प्रसार में सहयोगी बनें।

प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें
वैदिक प्रकाशन, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, मो. 9540040339

खुशखबरी! खुशखबरी!!

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा

वर्ष 2020 का कैलेण्डर प्रकाशित

मूल्य 1200/-रुपये सैंकड़ा

200 से अधिक प्रतियां के आर्डर देने पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा अतिरिक्त शुल्क (300/- सैकड़ा) पर उपलब्ध है। सम्पर्क करें-

व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष : 011-23360150,
मो. 09540040339

जानिये एम डी एच देगी मिर्च की
शुद्धता, गुणवत्ता और उत्तमता की
सच्चाई
यह मिर्च कर्नाटक में पैदा होती हैं। वहां पर लगभग 1000 औरतें पूरा दिन सिर्फ मिर्च की डंडी उतारने के काम में लगी रहती हैं। उसी मिर्च से देगी मिर्च तैयार होती है।

क्या आप लकड़ी (डंडी) मिला मिर्च मसाला खाना चाहते हैं या बिना लकड़ी (डंडी) वाला मिर्च मसाला ?
लकड़ी (डंडी) बिना मिर्च मसाला शुद्धता और स्वाद के गुणों से भरपूर होता है। मसाला लगता भी कम है और स्वाद भी भरपूर आता है। क्योंकि बिना लकड़ी (डंडी) के मिर्च की शुद्धता 20% से भी ज्यादा और बढ़ जाती है। जबकि लकड़ी (डंडी) मिला मिर्च मसाला लगता भी ज्यादा है और स्वाद भी नहीं आता है और तो और यह सेहत के लिये भी नुकसान दायक होता है।
आप खुद ही फैसला कीजिये कि आप कैसा मिर्च मसाला खाना पसंद करेंगे क्योंकि सवाल सिर्फ शुद्धता और स्वाद का ही नहीं आप की सेहत का भी है।
MDH मसाले सेहत के रखवाले असली मसाले सच-सच

महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली - 110015 फोन नं० 011-41425106-07-08
E - mails : mdhcare@mdhspices.in, delhi@mdhspices.in www.mdhspices.com
ESTD. 1919

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह